INTERNATIONAL NEWS AND VIEW CORPORATION
INVC
अंतरराष्ट्रीय समाचार एवं विचार निगम

स्वामी सानंद गंगा संकल्प संवाद श्रृंखला का छठा कथन : भीख मांगकर भरपाई और प्रस्तोता का पश्चाताप

By : INVC Team Published On : 26 Feb, 2016 09:21 AM IST

- अरुण तिवारी -

भिक्षा, जल त्याग और भागीरथी इको संसेटिव ज़ोन

प्रो जी डी अग्रवाल जी से स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद जी का नामकरण हासिल गंगापुत्र की एक पहचान आई आई टी, कानपुर के सेवानिवृत प्रोफेसर, राष्ट्रीय नदी संरक्षण निदेशालय के पूर्व सलाहकार, केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के प्रथम सचिव, चित्रकूट स्थित ग्रामोदय विश्वविद्यालय में अध्यापन और पानी-पर्यावरण इंजीनियरिंग के नामी सलाहकार के रूप में है, तो दूसरी पहचान गंगा के लिए अपने प्राणों को दांव पर लगा देने वाले सन्यासी की है। जानने वाले, गंगापुत्र स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद को ज्ञान, विज्ञान और संकल्प के एक संगम की तरह जानते हैं।

मां गंगा के संबंध मंे अपनी मांगों को लेकर स्वामी ज्ञानस्वरूप सांनद द्वारा किए कठिन अनशन को करीब सवा दो वर्ष हो चुके हैं और 'नमामि गंगे' की घोषणा हुए करीब डेढ़ बरस, किंतु मांगों को अभी भी पूर्ति का इंतजार है। इसी इंतजार में हम पानी, प्रकृति, ग्रामीण विकास एवम् लोकतांत्रिक मसलों पर लेखक व पत्रकार श्री अरुण तिवारी जी द्वारा स्वामी ज्ञानस्वरूप सानंद जी से की लंबी बातचीत को सार्वजनिक करने से हिचकते रहे, किंतु अब स्वयं बातचीत का धैर्य जवाब दे गया है। अतः अब यह बातचीत को सार्वजनिक कर रहे हैं। हम प्रत्येक शुक्रवार को इस श्रृंखला का अगला कथन आपको उपलब्ध कराते रहेंगे ; यह हमारा निश्चय है।

इस बातचीत की श्रृंखला में पूर्व प्रकाशित कथनों को पढ़ने के लिए यहाँ क्लिक करें।

छठा कथन आपके समर्थ पठन, पाठन और प्रतिक्रिया के लिए प्रस्तुत है :

स्वामी सानंद गंगा संकल्प संवाद - छठा कथन

वर्ष 2010 मंे हरिद्वार का कुंभ अपेक्षित था। शंकराचार्य जी वगैरह सब सोच रहे थे कि कुंभ में कोई निर्णय हो जायेगा। कई बैठकें हुईं। अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष ज्ञानदास जी ने घोषणा की कि यदि परियोजनायें बंद नहीं हुई, तो शाही स्नान नहीं होगा। लेकिन सरकार ने उन्हे मना लिया और कुंभ मंे शाही स्नान हुआ। कुंभ के दौरान ही शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद जी के मण्डप में एक बड़ी बैठक हुई। मेरे अनुरोध पर शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद जी

भी आये। अंततः यही हुआ कि आंदोलन होना चाहिए।

भीख मांगकर, परियोजना नुकसान भरपाई की घोषणा

....फिर तीन मूर्ति भवन मंे मधु किश्वर (मानुषी पत्रिका की संपादक) व राजेन्द्र सिंह जी ने एक बैठक की। उसमें जयराम रमेश (तत्कालीन वन एवम् पर्यावरण मंत्री) भी थे और स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद जी (शंकराचार्य श्री स्वरूपानंद सरस्वती जी के शिष्य प्रतिनिधि) भी थे। जयराम जी ने कहा - "600 करोङ खर्च हो गया है ; क्या करें " इस पर अविमुक्तेश्वरानंद जी ने कहा - **"एक महीने का समय दो। हम पैसा इकट्ठा करके दे देंगे। हम भीख मांगकर देंगे।"** जयराम रमेश ने मज़ाक मंे कहा - "मेरा कमीशन ?" अविमुक्तेश्वरानंद जी बोले - " बताओ कितने ? वह भी देंगे ?" कमीशन का तो मज़ाक था, लेकिन जयराम जी ने माना कि नुकसान की भरपाई की बात कही जाये, तो रास्ता निकल सकता है। तय हुआ कि यही बात लिखकर सरकार को दी जाये। ड्राफ्ट बना ; अविमुक्तेश्वरानंद जी ने ज़िम्मेदारी ली। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद जी के ज़िम्मेदारी लेने से उनके प्रति मेरी श्रृद्धा कुछ ऐसी बनी कि मुझे ऐसा लगा कि जितना स्नेह मुझे पिता व परिवार से नहीं मिला, वह उन्होने दिया। **मैने सोचा कि यदि भिक्षा मांगकर देने को कहा है, तो यह गंगाजी और मेरे... दोनो के प्रति उनका स्नेह है, लेकिन कुछ नहीं हुआ**

भीख मांगकर, परियोजना नुकसान भरपाई की घोषणा

....फिर तीन मूर्ति भवन मंे मधु किश्वर (मानुषी पत्रिका की संपादक) व राजेन्द्र सिंह जी ने एक बैठक की। उसमें जयराम रमेश (तत्कालीन वन एवम् पर्यावरण मंत्री) भी थे और स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद जी (शंकराचार्य श्री स्वरूपानंद सरस्वती जी के शिष्य प्रतिनिधि) भी थे। जयराम जी ने कहा - "600 करोङ खर्च हो गया है ; क्या करें " इस पर अविमुक्तेश्वरानंद जी ने कहा - "एक महीने का समय दो। हम पैसा इकट्ठा करके दे देंगे। हम भीख मांगकर देंगे।" जयराम रमेश ने मज़ाक मंे कहा - "मेरा कमीशन ?" अविमुक्तेश्वरानंद जी बोले - " बताओ कितने ? वह भी देंगे ?" कमीशन का तो मज़ाक था, लेकिन जयराम जी ने माना कि नुकसान की भरपाई की बात कही जाये, तो रास्ता निकल सकता है। तय हुआ कि यही बात लिखकर सरकार को दी जाये। ड्राफ्ट बना ; अविमुक्तेश्वरानंद जी ने ज़िम्मेदारी ली। स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद जी के ज़िम्मेदारी लेने से उनके प्रति मेरी श्रृद्धा कुछ ऐसी बनी कि मुझे ऐसा लगा कि जितना स्नेह मुझे पिता व परिवार से नहीं मिला, वह उन्होने दिया। मैने सोचा कि यदि भिक्षा मांगकर देने को कहा है, तो यह गंगाजी और मेरे... दोनो के प्रति उनका स्नेह है, लेकिन कुछ नहीं हुआ।

केन्द्र पर निष्प्रभावी स्थानीय समर्थन

मुझे खुशी हुई कि उन्होने सावधानी बरती। मैं किसी का बंधन होने से बच गया। मैं शंकराचार्य जी से मिलकर मुजफ्फरनगर चला गया। आगे तय समयानुसार, मातृसदन जाकर मैने यज्ञ किया और अनशन शुरु कर दिया। उन्होने प्रेस वाले बुला लिए थे। अगले दिन रामदेव जी पहुंच गये। रामदेव जी ने हाइवे जाम करने की बात की। हंसदेवाचार्य जी आ गये। समर्थन मिला, लेकिन इस समर्थन का केन्द्र पर कोई प्रभाव नहीं था ; सो, सारा समर्थन हरिद्वार से आगे नहीं बढ़ पाया। यह दिख ही रहा था कि मसला, कंाग्रेस बनाम भाजपा हो गया है। इस बीच स्वरूपानंद जी का कोई सक्रिय समर्थन नहीं आया। एक आनंद पाण्डेय जी उनकी ओर से आते थे ; लगता था कि वह बीच में गोलमोल करते हैं।

जलत्याग की तैयारी

कुछ हो नहीं रहा था ; तब हंसदेवाचार्य, प्रमोद कृष्णम वगैरह 12-14 लोगों का समूह आया। उन्होने कहा कि वे दिल्ली जायेंगे। 12 अगस्त को वे शिंदे (तत्कालीन केन्द्रीय ऊर्जा मंत्री, भारत सरकार) के यहां गये। शिंदे ने कहा कि गवर्नमं◌ेट लागत हजार करोड़ पहुंच चुकी है ; काम बंद नहीं होगा। वे प्रणव मुखर्जी से मिले। राजेन्द्र सिंह, प्रमोद कृष्णम (कभी कांग्रेस के पदाधिकारी थे, अब संभल स्थित कल्कि पीठाधीश्वर के रूप में धर्मक्षेत्र में सक्रिय) उनके संपर्क में रहे। प्रणव मुखर्जी ने प्रधानमंत्री से बात करके उत्तर देने की बात की। 17 अगस्त तक कोई जवाब नहीं आया। **मैने कहा कि यदि 20 अगस्त तक कुछ नहीं हुआ, तो जल भी त्याग दूंगा।** स्वामी शिवानंद जी ने कहा कि आप निश्चिंत रहें। जहां लगे, वहां स्थगित कर दें। किंतु तब तक मेरा वजन मात्र दो किलो गिरा था ; इसलिए मैं सेहत को लेकर आश्वस्त था।

पलटा घटनाक्रम : सक्रिय हुए जयराम

20 अगस्त को जयराम रमेश, मातृसदन आये। जयराम रमेश के पिता बांबे बीजीटीआई में सिविल इंजीनियरिंग के अध्यक्ष थे ; सी टी रमेश - हम उन्हे प्रोफेसर रमेश कहते थे। वह हमारे मित्र थे। जब जयराम रमेश आये, तो **मैने पूछा - "आप किस रूप में आये हैं ? मित्र के रूप में, मित्र के पुत्र के रूप में, मंत्री के रूप में या प्रधानमंत्री जी के दूत के रूप में ?"** जयराम ने कहा - "मैं आपसे व्यक्तिगत मित्र के रूप मं◌े आया हूं।" उन्होने बताया कि सरकार क्या-क्या कर सकती है। उस पर मेरी आपत्तियां थी। पहली आपत्ति कि किस कारण से गंगाजी पर परियोजनायें करें ? कोई एक स्पेशिफिक कारण तो हो। मैं बांधों के विरुद्ध हूं, किंतु मैं नहीं कहता कि मैं सब बांधों के विरुद्ध हूं। सब बांधों के विरुद्ध लड़ना है, तो कोई और लड़े। मैने कहा कि जो ड्राफ्ट बने, उसका पहला पैरा गंगा पर हो। गंगोत्री से 130 किलोमीटर उत्तरकाशी तक विशेष ज़ोन डिक्लेयर करें। उसमं◌े गंगाजी का नैसर्गिक स्वरूप बनाकर रखने की बात हो।

मानी गई इको सं◌ेसेटिव ज़ोन की मांग

जयराम ने अगले दिन ड्राफ्ट बनाकर भेजा। मैने इम्पूरव करके दिया। उस पर प्रणव मुखर्जी ने साइन करे दिए। उसमें ऊपर से उत्तरकाशी तक भागीरथी का इको संसेटिव ज़ोन घोषित करने की बात थी। मैने 22 अगस्त को अपना उपवास तोड़ दिए। **मेरे लिए यह जानना महत्वपूर्ण था कि 17 तक जहां कोई सुनने को राजी नहीं था, आखिर क्या हुआ कि 20 को सब हो गया। एक नया चित्र आया, प्रमोद कृष्णम का। वह अखिल भारतीय संत समिति के अध्यक्ष थे।**

([illegible] 600 [illegible]

[illegible]

संवाद जारी...

अगले सप्ताह दिनांक 04 मार्च, 2016 दिन शुक्रवार को पढ़िए स्वामी सानंद गंगा संकल्प संवाद श्रृंखला का सातवां कथन

परिचय -:

अरुण तिवारी

लेखक ,वरिष्ट पत्रकार व् सामजिक कार्यकर्ता

1989 में बतौर प्रशिक्षु पत्रकार दिल्ली प्रेस प्रकाशन में नौकरी के बाद चौथी दुनिया साप्ताहिक, दैनिक जागरण-दिल्ली, समय सूत्रधार पाक्षिक में क्रमशः उपसंपादक, वरिष्ठ उपसंपादक कार्य। जनसत्ता, दैनिक जागरण, हिंदुस्तान, अमर उजाला, नई दुनिया, सहारा समय, चौथी दुनिया, समय सूत्रधार, कुरुक्षेत्र और माया के अतिरिक्त कई सामाजिक पत्रिकाओं में रिपोर्ट लेख, फीचर आदि प्रकाशित।

1986 से आकाशवाणी, दिल्ली के युववाणी कार्यक्रम से स्वतंत्र लेखन व पत्रकारिता की शुरुआत। नाटक कलाकार के रूप में मान्य। 1988 से 1995 तक आकाशवाणी के विदेश प्रसारण प्रभाग, विविध भारती एवं राष्ट्रीय प्रसारण सेवा से बतौर हिंदी उद्घोषक एवं प्रस्तोता जुड़ाव।

इस दौरान मनभावन, महफिल, इधर-उधर, विविधा, इस सप्ताह, भारतवाणी, भारत दर्शन तथा कई अन्य महत्वपूर्ण ओ बी व फीचर कार्यक्रमों की प्रस्तुति। श्रोता अनुसंधान एकांश हेतु रिकार्डिंग पर आधारित सर्वेक्षण। कालांतर में राष्ट्रीय वार्ता, सामयिकी, उद्योग पत्रिका के अलावा निजी निर्माता द्वारा निर्मित अग्निलहरी जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के जरिए समय-समय पर आकाशवाणी से जुड़ाव।

1991 से 1992 दूरदर्शन, दिल्ली के समाचार प्रसारण प्रभाग में अस्थायी तौर संपादकीय सहायक कार्य। कई महत्वपूर्ण वृतचित्रों हेतु शोध एवं आलेख। 1993 से निजी निर्माताओं व चैनलों हेतु 500 से अधिक कार्यक्रमों में निर्माण/ निर्देशन/ शोध/ आलेख/ संवाद/ रिपोर्टिंग अथवा स्वर। परशेप्शन, यूथ पल्स, एचिवर्स, एक दुनी दो, जन गण मन, यह हुई न बात, स्वयंसिद्धा, परिवर्तन, एक कहानी पत्ता बोले तथा झूठा सच जैसे कई श्रृंखलाबद्ध कार्यक्रम। साक्षरता, महिला सबलता, ग्रामीण विकास, पानी, पर्यावरण, बागवानी, आदिवासी संस्कृति एवं विकास विषय आधारित फिल्मों के अलावा कई राजनैतिक अभियानों हेतु सघन लेखन। 1998 से मीडियामैन सर्विसेज नामक निजी प्रोडक्शन हाउस की स्थापना कर विविध कार्य।

संपर्क -: ग्राम- पूरे सीताराम तिवारी, पो. महमदपुर, अमेठी, जिला- सी एस एम नगर, उत्तर प्रदेश , डाक पता: 146, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली- 92 Email:- amethiarun@gmail.com . फोन संपर्क: 09868793799/7376199844

Disclaimer : The views expressed by the author in this feature are entirely his own and do not necessarily reflect the views of INVC NEWS .

आप इस लेख पर अपनी प्रतिक्रिया **newsdesk@invc.info** पर भेज सकते हैं। पोस्ट के साथ अपना संक्षिप्त परिचय और फोटो भी भेजें।

URL : https://www.internationalnewsandviews.com/स्वामी-सानंद-गंगा-संकल्प-4/

INTERNATIONAL NEWS AND VIEW CORPORATION
INVC
अंतरराष्ट्रीय समाचार एवं विचार निगम

12th year of news and views excellency

Committed to truth and impartiality

Copyright © 2009 - 2019 International News and Views Corporation. All rights reserved.